International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
www.hindijournal.com
Volume 1; Issue 1; November 2015; Page No. 37-38

छायावाद काव्यः प्रकृति का काल्पनिक एवं प्रेमपूर्ण चित्र

बीना देवी

अस्सिटेंट लेक्चरर, द्रोणाचार्य राजकीय महाविद्यालय, गुड़ंगाव, हरियाणा, भारत।

1. प्रस्तावना

आधुनिक काल में छायावादी काव्य में प्रकृति को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। यह एक स्वीकृत तथ्य है। छायावादी काव्य ने पाश्चात्य साहित्य और उससे प्रभावित बंगला साहित्य से प्रभाव ग्रहण करते हुए खड़ी बोली हिन्दी में प्रकृति–चित्रण को नई दिशा दी। आधुनिक भारतीय समाज के विकास की दिशा उसे इसी ओर जाने के लिए प्रेरित और प्रभावित कर रही थी। नामवर सिंह का यह कथन इसका प्रमाण देता है – "विज्ञान के द्वारा प्रकृति से संघर्ष करते हुए भी आधुनिक मानव ने उससे प्रेम किया। जिस प्रकृति से संघर्ष उसी से प्रेम यह आधुनिक युग का ही सत्य नहीं है; बल्कि मानव जाति के समूचे इतिहास का ही यही निष्कर्ष है।"1 तात्पर्य यह है कि आधुनिक विज्ञान के विकास ने प्रकृति के साथ संघर्ष करते हुए, उससे मानव का एक नया संबंध जोड़ा। छायावादी कवियों का प्रकृति की ओर झुकना, प्रकृति को इतना महत्त्व देना, प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता को काव्य में प्रतिष्ठित करना – ये आधुनिक विज्ञान का ही परिणाम है। विज्ञान ने 'विवेक' के द्वारा प्रकृति का रहस्योद्घाटन किया। लेकिन आज मानव ने उस विवेक को ही खो दिया है।

आधुनिक मानव प्रकृति की ओर मुड़ने लगा है। "पुरानी समाज व्यवस्था के घुटते हुए वातावरण की अपेक्षा आधुनिक मानव को प्रकृति के बीच खुला वातावरण मिला; प्रकृति के राज्य में उसे पशु–पक्षियों, नदी–नालों, हवा–बादल सब में उन्मुक्त और निरंकुश स्वच्छंदता के दर्शन हुए। इसी स्वाधीनता की टोह में आधुनिक कवि प्रकृति के क्षेत्र में आया। आधुनिक व्यक्ति का प्रकृति की ओर दौड़ना, व्यक्तिगत स्वच्छंदता माने व्यक्तिगत स्वाधीनता का परिणाम था।"2 छायावादी काव्य में प्रकृति का आधुनि रूप विद्यमान है। यह इसलिए हुआ कि वैज्ञानिक प्रगति छायावादी कवियों को प्रकृति के काफी निकट लायी और स्वाधीनता आन्दोलन ने उनके भीतर स्वतंत्रता की तीव्र चेतना उत्पन्न कर दी थी। इससे वे मुक्त भाव से, प्रकृति के सौंदर्य को देखने और उसके आस्वादन करने में सफल हुए। छायावादी कवियों ने अनेक प्रकार से प्रकृति को देखा ओर उसकी छवियों का अंकन किया। प्रकृति उनके लिए साधन भी थी और साध्य भी।

प्रकृति को छायावादी कवि ने जिज्ञासा, आत्मीयता तथा रागात्मक वृत्तियों के सहारे देखा था। छायावादी कवि का प्रकृति–चित्रण आत्मीय भावनाओं से भरा हुआ है। वह प्रकृति के जीवन रहस्य का व्यापक दर्शन करता है। छायावादी प्रकृति चित्रण अपने में सम्पूर्ण नया और सौद्धितीय है। छायावादी कवि ने प्रकृति–सौन्दर्य का वर्णन करते हुए प्रकृति के प्रति असीम श्रद्धा और विश्वास की भावना प्रकट की है।

2. छायावादी कवियों के प्रकृति दर्शन

2.1. पंत के काव्य के प्रकृतिः

सुमित्रानंदन पंत प्रकृति सौंदर्य के अमर गायक हैं। उनके काव्य सृजन की प्रेरणा ही प्रकृति है। "वीणा", "ग्रन्थि", "पल्लव", "गुंजन" जैसे प्रारम्भिक रचनाओं में कवि के प्रकृति के प्रति आग्रह सर्वत्र द्रष्टवट है। पल्लव कवि के प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम का दिग्दर्शन है। 'गुंजन में प्रकृति, मानव भावों की रंगभूमि, चेतना के स्पन्दन, प्राणों की धडकन तथा प्रकृति और मानव में एकाकार की भावना आदि रूपों में अवतरित होती है। उनका काव्य प्रकृति के माध्यम को लेकर जीवन के बहुत से जटिल, प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास करता हे। इसलिए प्रकृति कवि के लिए कहीं आराध्या देवी हे तो कहीं अध्यापिका है।

> "कुसमों के जीवन का पल हँसता ही जग में देखा, इन म्लान, मलिन अधरो पर स्थिर रही न स्मिति की रेखा!
> वन की सूनी डाली पर सीखा कलियों ने मुस्काना मैं सीख न पाया अब तक सुख से दुःख को अपनाना।"[3]

और कहीं – कहीं कवि ने ऐसे चित्र भी खींचे हैं जहाँ खुद मानव प्रकृति का गुरु बन जाता है। इस प्रकार कवि ने प्रकृति और मानव के बीच एकाकार की भावना की स्थापना की है।

> "सीखा तुम से फूलों ने मुख देख मंद मुस्काना तारों ने सजल नयन हो करूणा किरणें बरसाना।
> सीखा हँसमुख लहरों ने आपस में मिल खो जाना, अलि ने जीवन का मधु पी, मृदु राग प्रणय के गाना।"4

प्रकृति का काल्पनिक तथा मनोरम चित्र भी उनके काव्य में उपस्थित है। यह प्रायः छायावादी काव्य की ही प्रमुख विशेषता रही है। उदाहरण के लिए 'सन्ध्या' शीर्षक कविता में सुन्दर कल्पनाओं के माध्यम से प्रकृति का रमणीय चित्र खींच कर कवि इसका प्रमाण देता है।

> "कहो तुम रूपसि कौन?
> व्योम से उतर रही चुपचाप छिपी निज छाया छवि में आप, सुनहरा फैला केश कलाप मधुर, मंथर, मृदु, मौन।"[5]

पंत जी के प्रकृति चित्रण में प्रकृति हर कहीं व्याप्त है। उनके लिए प्रकृति मानव की रंगभूमि है उनकी गुरु है।

2.2. जयशंकर प्रसाद की प्रकृति चित्रण

छायावादी कवियों के लिए प्रकृति साधन है। छायावादी काव्य में प्रकृति मानव के किन्हीं भावों का साधन है। प्रसाद जी की प्रकृति, चेतना सम्पन्न है। कामायनी के प्रारम्भ में कवि ने मानवीय भावों की परिव्याप्ति में किस प्रकार दिखाया है इसका प्रमाण है चिन्ता सर्ग की ये पंक्तियाँ :

> "दूर दूर तक विस्तृत था हिम स्तब्ध उसी के ह्रदय के समान नीरवता –सी शिला चरण से टकराता फिरता पवमान।
> तरूण तापसी–सा वह बैठा साधन करता सुर श्मशान नीचे प्रलय–सिंधु–लहरो का, होता था सकरुण अवसान।
> उसी तपस्वी से लम्बे थे देवदारु दो चार खड़े; हुए हिम–धवल जैसे पत्थर बन कर ठिठुरे रहे अड़े"6

कामायनी में कुछ प्रसंग ऐसे भी हैं जहाँ कवि ने प्रकृति को पीठिका के रूप में उपयोग किया है। उदाहरण के लिए मनु किसी अज्ञात संगीत को सुनकर जब कुतूहलवश उस ओर देखता है तो उसे जो आकृति दिखाई पड़ी उसका वर्णन कवि ने प्रकृति के माध्यम से बहुत ही सुन्दर और अनुपम ढंग से प्रस्तुत किया है।

"और देखा वह सुन्दर दृश्य नयन का इंद्रजाल अभिराम कुसुम वैभव में लता–समान चंद्रिका से लिपटा घन श्याम"[7]

कामायनी में प्रसादजी ने प्रकृति के अनेक अंगों को प्रतीक रूप में ग्रहण किया है। जैसे कि प्राचीन काल में बसन्त को यौवन का प्रतीक माना गया हे और उसका प्रयोग प्रसाद जी ने कामायनी के काम सर्ग के प्रारम्भ में किया है। प्रकृति के मानवीकरण भी काव्य में यंत्र–तंत्र मिलते हैं।

2.3. प्रकृति में रहस्यमय प्रियतम का आरोपण – महादेवी के काव्य के संदर्भ में

महादेवी के काव्य में प्रकृति की विराट सौंदर्य भूमि दर्शनीय है। प्रकृति उनके लिए एक अज्ञात रहस्यमय प्रियतम है। इसलिए तो 'मुस्कुराता संकेत भरा नभ' महादेवी के लिए प्रिय के आने का संकेत है। महादेवी ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति को पृष्ठभूमि, वातावरण, माध्यम एवं साधन के रूप में प्रयोग किया है। प्रकृति के आन्तरिक सौन्दर्य का चित्रण उनके काव्य में मिलते हैं।
महादेवी ने प्रकृति का मानवीकरण करके उसकी स्थिति से अपनी मानसिक भावानुकूलता को व्यंजित किया है। प्रकृति में चेतन के रूप और गुणों का आरोप मानवीकरण का प्रमुख लक्ष्य है। उनके काव्य में प्रकृति के विभिन्न रूपों एवं कार्य – व्यापारों पर मानवीय भावों का आरोपण अत्यन्त सूक्ष्मता, सजीवता एवं स्वाभाविकता के साथ किया गया हे। 'मूर्झाया फूल' कविता की पंक्तियाँ –

"था कली के रूप शैशव में अहों सूखे सुमन!

.....

कह रहा अठखेलियाँ इतरा सदा उद्यान में, अन्त का यह दृश्य आया था कभी क्या ध्यान में ?
से राह अब तू धरा पर शुष्क बिखराया हुआ, गध कोमलता नहीं मुख मंजु मुरझाया हुआ।"[8]

यहाँ महादेवी ने मुरझाया फूल के माध्यम से मानवीय जीवन के शाश्वत सत्य का उद्घाटन किया।

2.4. शक्ति का प्रतीक प्रकृति – निराला के काव्य में

निराला के लिए प्रकृति ब्रहम है, शक्ति है, 'बहती निराधार पृथ्वी, गगन में, 'अतुनु में सुनतु–हार' के द्वारा कवि ने प्रकृति को अनंत, पूर्ण, अनादि और निराधार घोषित किया है।

"भारतीय दर्शन में जो पाँच तत्व पसिद्ध हैं वे शक्ति के विभिन्न रूप हैं। इसीलिए ये पाँच तत्व देखने में पाँच होते हुए भी वास्तव में एक ही है।, जो आकाश है, वहीं बदलकर पृथ्वी बनता है, जो पृथ्वी है वह जल बनती है, जो हल है वह हवा अथवा आकाश बन जाता है"[9]

निराला की प्रकृति उनकी अनेक कविताओं में तरह–तरह से चित्रित है। 'सरोज–स्मृति' में जहाँ निराला ने दृष्टि का वर्णन किया है, वहाँ शक्ति से पाँच तत्वों का सम्बन्धत उपर्युक्त दार्शनिक धारणाओं के अनुकूल है :

"क्या – दृष्टि ! अतल की सिक्त धार ज्यो भोगवती उठी अपार, उमड़ता ऊर्ध्व को कल सलील जल टलमल करता नील–नील पर बंधा दे हके दिव्य बाँध, छलकता दृगों से साध–साध"।[10]

निराला का काव्य प्रकृति वर्णन के माध्यम से स्वानुभूतिमय पूजन और मानव की परिष्कृत चेतना का संचलन करता है। प्रकृति का आलमबन, उद्दीपन, पृष्ठभूमि, उपमा आदि सभी रूपों में प्रयोग हुआ है। 'जुही की कली' में जुही की कली और पवन के माध्यम से प्रकृति का मानवीकरण किया है। उसी प्रकार प्रकृति के अनंत चित्रों का चित्रांकन 'संध्या' कविता में हुआ है।
संक्षेप में देखा जाए तो प्रकृति–सौंदर्य का चित्रण करते हुए प्रकृति के प्रति एक असीम श्रद्धा और विश्वास की भावना छायावादी काव्य में प्राप्त है। देखना चाहिए कि "इस समय में भारतीय जीवन प्रायः नवीन वैज्ञानिक संस्कृति के गुणों, अवगुणों से सामान्यता उतना परिचित नहीं थे। प्रकृति की गोद में मानवीय जीवन आनन्दमुक्त थे। यंत्रवाद की कर्कशता उसे स्पर्श नहीं की थी" इसलिए प्रकृति का कलात्मक, सुन्दर, मनोरम एवं प्रेमपूर्ण चित्र इस काल की रचनाओं में परिलक्षित है।

3. संदर्भ

1. नामवर सिंह – छायावाद – पृ० 33।
2. वहीं – पृ० 33।
3. सुमित्रानंदन पंत – पल्लविनी – पृ० 220।
4. सुमित्रानंदन पंत – पल्लविनी – पृ० 226।
5. वहीं, पृ० 318।
6. जयशंकर प्रसाद – कामायनी – पृ० 13।
7. वहीं, पृ० 56।
8. महादेवी वर्मा – नीहार – पृ० 50–51।
9. राम विलास शर्मा – 'निराला की साहित्य साधना' – पृ० 76।
10. निराला – अनामिका – पृ० 126।